विद्यापति

पदावली

नन्दक नन्दन[1] कदम्बक तरु[2]-तर[3]

धिरे धिरे मुरलि बजाव।

समय संकेत निकेतन[4] बइसल

बेरि बेरि बोलि पठाव[5]।।

सामरि[6] तोरा[7] लागि।

अनुखन[8] विकल मुरारि।।

जमुनाक तिर[9] उपवन उदवेगल[10]

फिरि फिरि ततहि[11] निहारि[12]।

गोरस[13] बेचए अबइत जाइत[14]

जनि जनि पुछ बनमारि[15]।।

तोहे मतिमान[16], सुमति[17] मधुसूदन

बचन सुनह किछु मोरा।

भनइ[18] विद्यापति सुन बरजौवति[19]

बन्दह नन्द किषोरा।।1।।

देख देख राधा रूप अपार।

अपुरुब[20] के बिहि[21] आनि मिलाओल[22]

खिति-तल[23] लावनि सार।।

अंगहि अंग अनंग[24] मुरछायत[25]

---

1. नंद के बेटे अर्थात श्री कृष्ण (नन्दक नन्दन) 2. पेड़ 3. तले, नीचे 4. मिलन-स्थल (संकेत निकेतन) 5. भेज रहे हैं 6. श्यामा, साँवली आकर्षक स्त्री 7. तुम्हारे 8. प्रतिक्षण 9. किनारे 10. उद्विग्न, बेचैन 11. उसी ओर 12. देखकर 13. दूध, दही 14. आती-जाती 15. वनमाली, कृष्ण 16. बुद्धिमान 17. बुद्धिमति 18. कहते हैं 19. श्रेष्ठ स्त्री 20. अपूर्व 21. ब्रह्मा, विधाता 22. मिलाना 23. पृथ्वी पर, क्षिति पर 24. कामदेव 25. मूर्छा आना

हेरए [26] पड़ए अथीर[27]।

मनमथ[28] कोटि-मथन करु जे जन

से हेरि महि-मधि[29] गीर।।

कत कत लखिमी[30] चरन-तल नेओछए [31]

रंगिनि[32] हेरि बिभोरि[33]।

करु अभिलाख मनहि पद पंकज

अहोनिसि[34] कोर अगोरि[35]।।2।।

माधव की कहब सुन्दरि रुपे।

कतेक जतन विहि[36] आनि समारल

देखल नयन सरुपे।।

पल्लव-राज[37] चरन-युग सोभित

गति गजराजक[38] भाने[39]।

कनक-कदलि[40] पर सिंह समारल

तापर मेरु[41] समाने।।

मेरु ऊपर दुह कमल फुलाएल

नाल[42] बिना रुचि पाई।

मनि-मय [43] हार धार बहु सुरसरि[44]

तओ नहि कमल सुखाई।।

अधर[45] बिम्ब सन, दसन[46] दाड़िम-विजु[47]

---

26. ढूँढना 27. चंचल 28. कामदेव 29. पृथ्वी पर 30. लक्ष्मी 31. न्योछावर होती है 32. सुंदरी 33. बेसुध होकर 34. दिन-रात 35. पहरा दे कर रखना 36. ब्रह्मा 37. कमल 38. हाथी के 39. समान 40 सोने के केले का थंब 41. पहाड़ 42. डंडी 43. मणियों की माला जैसी 44. गंगा 45. ओष्ट 46. दाँत 47. अनार का बीज

रवि ससि उगथिक पासे।
राहु दूर बस निएरे[48] न आबथि
तैं नहि करथि गरासे।।

सारँग[49] नयन बयन पुनि सारँग[50]
सारँग[51] तसु समधाने।
सारँग[52] ऊपर उगल दस सारँग[53]
केलि करथि मधुपाने।।

भनइ विद्यापति सुन बर जौबति
एहन[54] जगत नहि आने[55]।
राजा सिवसिंघ रुप नारायण
लखिमा देइ पति भाने।।3।।

सुधामुखि के बिहि निरमलि[56] बाला।
अपरुब रूप मनोभवमंगल[57]
त्रिभुवन विजयी माला।।

सुन्दर बदन[58] चारु अरु लोचन[59]
काजर-रंजित[60] भेला।
कनक-कमल माझे काल भुजंगिनि
श्रीयुत खंजन खेला।।

नाभि बिबर[61] सएं लोम-लतावलि
भुजगि[62] निसास[63]-पियासा

48. निकट 49. हरिण 50. कोयल 51. कामदेव 52. कमल (ललाट) 53. भौंरा (केश के गुच्छे) 54. ऐसा 55. दूसरा, अन्य 56. निर्माण किया 57. कामदेव का स्वरूप 58. मुखड़ा 59. आँख 60. काजल लगा हुआ 61. छेद 62. सर्पिणी 63. साँस

नासा खगपति[64]-चंचु भरम-मय
कुच-गिरि-संधि निवासा।।

तिन बान मदन तेजल[65] तिन भुवने
अवधि रहल दुइ बाने।
बिधि बड़ दारुन बधए रसिकजन
सोंपल तोहर नयाने।।

भनइ विद्यापति सुन बर जौबति
इह रस केओ पए जाने।
राजा सिवसिंघ रुपनरायन
लखिमा देइ रमाने।।4।।

ससन[66]-परस[67] खसु[68] अम्बर[69] रे
देखल धनि देह।
नव जलधर[70]-तर चमकए रे
जनि बिजुरी-रेह[71]।।

आज देखल धनि जाइत रे
मोहि उपजल रंग[72]।
कनक-लता जनि संचर[73] रे
महि निर अवलम्ब।।

ता पुन अपरुब देखल रे
कुच-जुग अरविन्द[74]।
बिगसित[75] नहि किछु कारन रे

64. गरुड़ 65. छोड़ा 66. श्वसन पवन 67. स्पर्श 68. गिर पड़ा 69. कपड़ा, आँचल 70. बादल 71. रेखा 72. प्रतीत हुआ (उपजल रंग) 73. चलना 74. कमल 75. खिला हुआ

सोझाँ [76] मुख – चन्द।।

विद्यापति कवि गाओल रे
रस बूझ रसमन्त।
देवसिंह नृप नागर रे
हासिनि देइ कन्त।।5।।

लोटाए [77] धरनि[78], उठए धरि सोई[79]।
खने खन[80] साँस खने खन रोई।।
खने खन मुरछइ कंठ परान।
इथि[81] पर की गति दैव से जान।।
हे हरि पेखलिहुँ [82] से बर नारि।
न जिउति[83] बिनु कर-परसें[84] तोहारि।।
केओ केओ जपए बेद दिठि[85] जानि।
केओ नब ग्रह पुज जोतिअ[86] आनि।।
केओ केओ कर धरि धातु[87] बिचार।
बिरह-बिखिन[88] कोइ लखए न पार।।6।।

माधब, तोहें जनु जाह[89] बिदेस।
हमरो रंग रभस[90] लए जएबह
लएबअ कओन सँदेस[91]।।
बनहि गमन करु होइति दोसरि मति।
बिसरि जाएब पति मोरा।
हीरा मनि मानिक एको नहि माँगब

76. सामने 77. लोटना 78. पृथ्वी (जमीन) 79. वह 80. क्षण, पल 81. इसके 82. (मैंने) देखा 83. जीएगी 84. हाथ का स्पर्श 85. नजर लगना 86. ज्योतिषी 87. नाड़ी 88. विरह से क्षीण हुई 89. मात जाओ (जनुजाह) 90. आमोद-प्रमोद (रंग रभस) 91. सौगात

फेरि माँगब पहु[92] तोरा।।
जखन[93] गमन करु नयन नीर[94] भरु
देखहु न भेल पहुओरा[95]।
एकहि नगर बसि पहु भेल परबस
कइसे पुरत[96] मन मोरा।।
पहु सँग कामिनि[97] बहुत सोहागिनि
चन्द्र निकट जइसे तारा।
भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति
अपन हदय धरु सारा[98]।।7।।

के[99] पतिआ[100] लए जाएत रे
मोरा पियतम पास।
हिय [101] नहि सहए असह दुख रे
भेल साओन[102] मास।।
एकसरि[103] भवन पिया बिनु रे
मोरा रहलो न जाय।
सखि अनकर[104] दुख दारुन[105] रे
जग के पतिआय [106]।।
मोर मन हरि[107] हरि[108] लए गेल रे
अपनो मन गेल
गोकुल तजि मधुपुर बस रे
कत अपजस[109] लेल।।
विद्यापति कबि गाओल रे

92. प्रिया 93. जिस क्षण 94. आँसू 95. प्रियतम की ओर 96. पूरा होना 97. स्त्रियाँ 98. धैर्य 99. कौन 100. पत्र 101. हृदय 102. सावन 103. अकेली 104. दूसरे का 105. तीव्र 106. विश्वास करता है 107. कृष्ण 108. हरण (करना) 109. अपयश

धनि धरु मन आस
आओत तोर मनभावन रे
एहि कातिक मास।।8।।

मोरा रे आँगना चानन[110] केरि गछिआ[111]
ताहि चढ़ि कुररए [112] काग रे।

सोने चोंच बाँधि देब तोहि बायस[113]
जओ पिया आओत आज।।
गाबह सखि सब झूमर लोरी
मयन-अराधए [114] जाऊँ रे।
चहुदिस चम्पा मउली[115] फूललि
चान इजोरिया[116] राति रे।
कइसे कए हमे मयन अराधब
होइति बड़ि रति-साति[117] रे।।
विद्यापति कबि गाबए तोहर
पहु अछ[118] गुनक निधान रे।
राओ भोगीसर सब गुन आगर
पदमा देइ रमान[119] रे।।9।।

110. चंदन 111. वृक्ष 112. बोल रहा है 113. काग 114. कामदेव की अराधना करने 115. मल्लिका पुष्प 116. चाँदनी 117. रति जनित पीड़ा 118. हैं 119. पति